115

सुरसा का मुँह

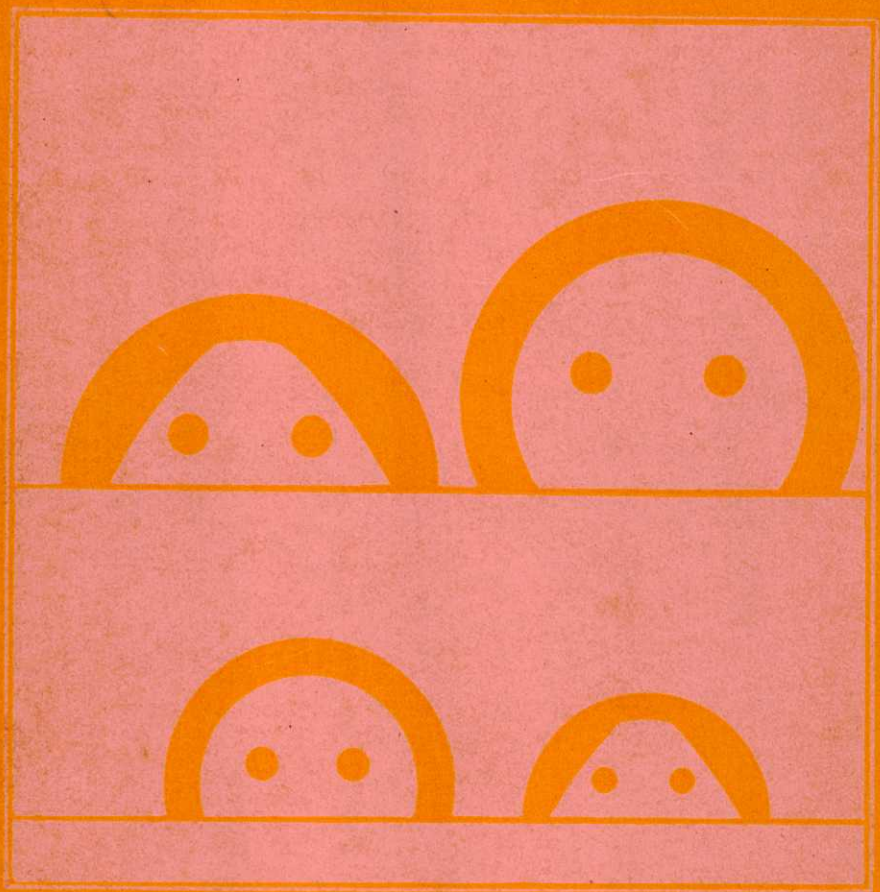

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

सुरसा का मुंह

सुरसा का मुँह

बिमला दत्ता

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नई दिल्ली

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
17-बी, इन्द्रप्रस्थ मार्ग,
नई दिल्ली-110002

मूल्य : तीन रुपये

प्रथम संस्करण : 1984

पुस्तक शृंखला संख्या : 146

मुद्रक :
शान प्रिंटर्स
रोहताश नगर
दिल्ली-110032

प्रस्तावना

प्रत्येक विकास का ध्येय है—आम जन के जीवन में गुणात्मक बढ़ोतरी। भारत में विकास के अनेकानेक कार्यक्रमों की सफलता प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रमों से सीधे जुड़ी है। जनसंख्या शिक्षण प्रौढ़ शिक्षा का एक अभिन्न अंग है। विकास कार्यक्रमों के सार्थक परिणामों के लिए जरूरी है कि जनसंख्या की असीमित बढ़ोतरी पर नियंत्रण हो। यह तभी संभव है जब प्रौढ़ों में इस भयावह समस्या के विभिन्न पहलुओं की जानकारी और उनसे निपटने की समझ पैदा हो। और यह समझ एक शैक्षिक कार्यक्रम के ज़रिए ही संभव है। भारत के करोड़ों प्रौढ़ों में बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्या के बारे में जागरूकता लाने की आवश्यकता है ताकि अपनी जिन्दगी को बेहतर बनाने हेतु वे अपने उत्तरदायित्वों को स्वयं महसूस करने लगें।

इसी संदर्भ में, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ ने एक महत्वपूर्ण पहल की है। प्रौढ़ों की शिक्षा में जनसंख्या शिक्षण को जोड़कर प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को चलाने सम्बन्धी एक अभिनव प्रयोग संघ ने किया है जिससे कि प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में वैकल्पित दृष्टिकोणों एवं संरचनाओं का विकास किया जा सके।

फैमिली प्लानिंग फाउंडेशन के सहयोग से भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ ने एक प्रायोगिक परियोजना का संचालन किया। यह प्रयोग प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी तीन स्वयंसेवी संस्थाओं—'जनता कल्याण समिति', रेवाड़ी (हरियाणा); 'उत्कल नवजीवन मंडल', अंगुल (उड़ीसा); तथा 'अजमेर प्रौढ़ शिक्षण समिति' (राजस्थान) —के सक्रिय सहयोग से सम्पन्न हुआ। रेवाड़ी के 16 गांवों में, अंगुल के 25 गांवों और अजमेर शहर के 20 मोहल्लों में जनसंख्या शिक्षण से सम्बद्ध प्रौढ़ शिक्षा का यह प्रायोगिक कार्यक्रम चलाया गया।

यह प्रयोगात्मक परियोजना लोगों की जनसंख्या शिक्षा सम्बन्धी उभरती आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को पूरा करने की दिशा में एक प्रयास था। इसमें मुख्य ज़ोर इस बात पर रहा कि वे सभी शिक्षार्थी, जिनमें से अधिकांश जनन-आयु समूह के हैं, अपनी समस्याओं

के समाधान के लिए इस शिक्षा योजना से समुचित लाभ उठा सकें। इसका उद्देश्य स्थानीय वास्तविकताओं से शिक्षार्थियों का परिचय करना रहा है। जिससे यह कार्यक्रम अधिक उपयोगी, सार्थक और प्रगतिशील बन सके।

इस कार्यक्रम के लिए, अनुवर्ती सामग्री के अन्तर्गत भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ ने चार पुस्तकें तैयार की हैं। इनसे नवसाक्षर प्रौढ़ों में साक्षरता को बनाये रखने में सहायता करने के साथ-साथ उन्हें जन-संख्या शिक्षण के बारे में जानकारी देना भी संभव हो सकेगा। हमें आशा है कि प्रौढ़ शिक्षा और जनसंख्या शिक्षण कार्यकर्त्ता इन्हें उपयोगी पायेंगे।

इन पुस्तकों को और उपयोगी बनाने में पाठकों की राय का हम स्वागत करेंगे।

"शफ़ीक़ मैमोरियल"
17-बी, इन्द्रप्रस्थ मार्ग,
नई दिल्ली-110002

जे० सी० सक्सेना
अवैतनिक महासचिव
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

विषय सूची

1.	अपने बस की बात	1
2	जमना तेरा पानी मैला	4
3.	बढ़ते परिवार, घटते भण्डार	8
4.	वो जंगल कहाँ गए ?	13
5.	छः छिक्का छत्तीस	18
6.	बढ़ता शोर, फटते कान	21
7.	चार से भले दो, दो से भला एक	25

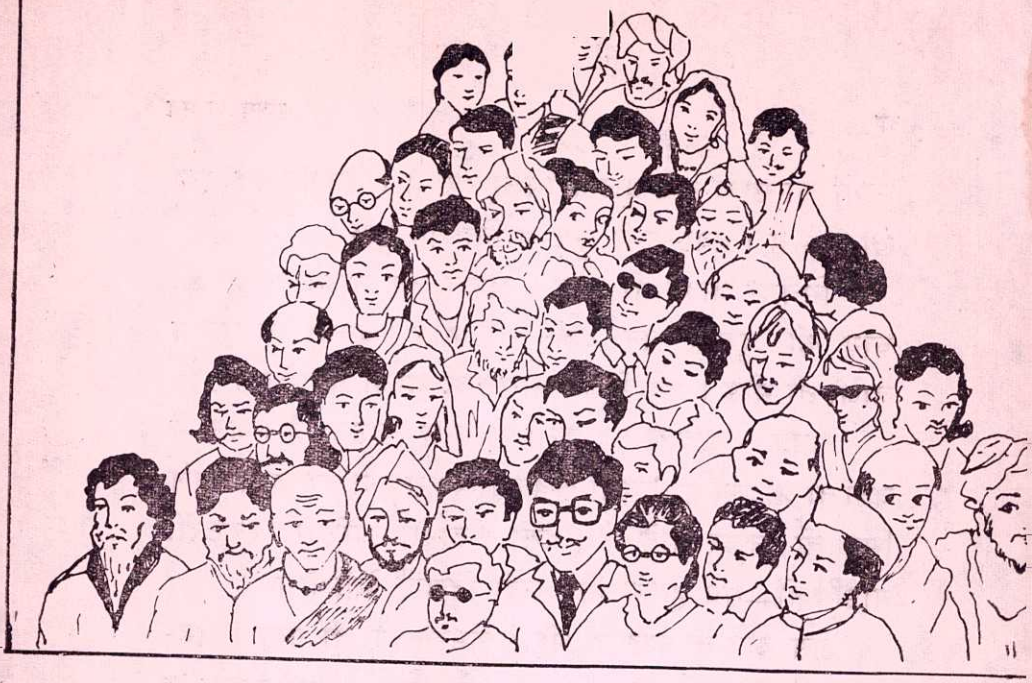

अपने बस की बात

कुन्ती के सिर्फ दो बच्चे हुए। उसने उन्हें स्कूल में डाल दिया है। जब भी बच्चों की छुट्टियाँ होती हैं तो वह घूमने चल देती है। अपने गाँव से बाहर। बच्चों को साथ ले जाती है।

इस बार वह दिल्ली गई थी। दिल्ली की हालत देखकर उसकी आँखें फट गईं। दिल्ली दूर-दूर तक फैल गई है। उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम। चारों ओर लोग बसते जा रहे हैं। दिन दूने, रात चौगुने। उनकी संख्या महाजन के ब्याज की तरह बढ़ती जा रही है। सरकार उसे रोकने की कोशिश कर रही है। पर भीड़ उसके काबू में नहीं आ रही है। जैसे कर्ज गरीब के मुँह का कौर छीन लेता है, वैसे ही भीड़ भी

लोगों का सारा सुख धूल में मिला रही है। उनका सब कुछ खा रही है। हवा-पानी सुख शान्ति सब कुछ।

सिनेमा जाओ तो भीड़। राशन लेने जाओ तो भीड़। चाय की दुकान पर देखो तो भीड़। बच्चों के स्कूल जाओ तो भीड़। दवाई लेने अस्पताल जाओ तो भीड़।

सड़क पर चलो तो कन्धे से कन्धे छिलता है। बस में चढ़ो तो आदमी से आदमी कुचलता है। सड़कों पर काले-काले सिर ही नज़र आते हैं। बसों, कारों, लारियों, स्कूटरों, साइकिलों—सब ही में भीड़ लदी दिखाई देती है।

इस बार तो रेल में भी ? कमाल ही हो गया। भेड़-बकरियों की तरह लोग भर गए थे अन्दर। कुछ संडास के बाहर अट गए थे। कुछ, दरवाज़े का हैण्डिल पकड़ कर लटक गए। कुछ, फिर भी रेल की छत पर जा चढ़े। बिना गए सरता नहीं। पर भीड़ की मुसीबत झेली नहीं जाती।

चारो तरफ के खेत भीड़ ने निगल लिए। उसके बसने के लिए हजारों हरे-भरे पेड़ कट गए। पेड़ों की जगह मकान बन रहे हैं, ऊँचे-ऊँचे। मंजिलों पर मंजिलें चढ़ती जा रही हैं। फिर भी भीड़ उनमें नहीं समा पा रही।

कुन्ती ने सोचा—अब नहीं जाऊँगी ऐसी भीड़-भाड़ की जगह। लेकिर दिल्ली हो क्यों, मेरा अपना कस्बा भी तो चारों ओर फैलता जा रहा है। वहाँ की भीड़ भी तो ऐसी हो बढ़ती जा रही है। बरसाती मेंढक की तरह नित नए मकान, नई झोंपड़ियाँ बढ़ती जा रही हैं।

आजकल हर चीज़ का अभाव है। सरकार खेती के नए नए तरीके निकाल रही है। रोज़ नए-नए स्कूल खोल रही है,

अस्पताल बना रही है। सड़के और रेल लाइनें बिछा रही है। मकान बना रही है। पीने के पानी की व्यवस्था कर रही है। पर बढ़ती हुई आबादी के सामने हर चीज़ छोटी पड़ती जा रही है। यह आबादी नहीं है। सुरसा का मुँह है जो हर चीज़ को खा जाता है।

आखिर लोग बच्चे पैदा करना कम क्यों नहीं करते ?

अगर बच्चे भगवान देता है तो भगवान उनके रहने-खाने के लिए हर चीज़ क्यों नहीं बढ़ा देता ! भीड़ बढ़ती है तो चीज़ें भी बढ़नी चाहिए। अगर चीज़े नहीं बढ़ सकती तो भीड़ नहीं बढ़नी चाहिए।

बच्चे तो मनुष्य अपनी इच्छा से पैदा करता है। भगवान बच्चे जबर्दस्ती नहीं देता किसी को। मनुष्य चाहे तो कम बच्चे पैदा कर सकता है।

यदि मनुष्य बच्चे पैदा करना कम कर दे तो आने वाली पीढ़ी बहुत बड़ी मुसीबत से बच सकती है। भीड़ रूपी राक्षस से वह छुटकारा पा सकती है।

डागदर साहब ठीक ही कहते हैं—

परिवार में एक या दो
यदि हों, बाल गोपाल।
तो कभी नहीं होगा,
किसी का बुरा हाल॥

□□

जमना तेरा पानी मैला

कमली के हर बार लड़की होती है। उसके घर वाले लड़के के लिए तरस गए हैं। पंडित जी ने कहा—कमली ! सोमवार को व्रत करा कर। जमुना नहाया कर। बामन जिमाया कर। जमना के पानी से पूजा किया कर।

इस बार कमली हर तरह से तैयार हो गई। सुबह उठते ही जमना जी नहाने चल दी। पीछे-पीछे तीनों लड़कियाँ भी चल दीं। बोलीं—हम भी जमना जी में नहाएँगे अम्माँ। हम भी नहाएँगे। लाचार कमलो उन्हें भी साथ ले गई।

कमली जमनाजी जा तो पहुँची। पानी में पाँव बढ़ाया। पर फौरन ही पाँव पीछे खींच लिया।

वह बुदबुदायी—राम राम, कैसी गन्दगी हैं यहाँ।

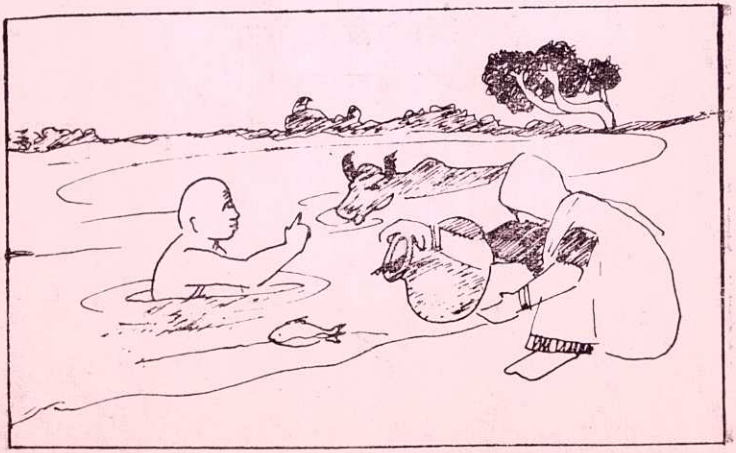

गन्दगी के झाग ही झाग बह रहे हैं। कूड़े के गोल-गोल थक्के जगह-जगह बह रहे हैं। किसी की टट्टी बह रही है। दूर एक मरा हुआ पशु बह रहा है। पानी से पूरा फूल उठा है। और वह पंखें पर बँधी हुई बच्चे की लाश ?

आँख-नाक बन्द करके कमली ने डुबकी तो लगा ली, पर जब घड़े में पानी भरने लगी तो उसे उबकाई आने लगी।

कमली ने लड़कियों को भी पीछे खींच लिया। बोली—नहीं। यहाँ नहीं नहाना। देखती नहीं कितनी गन्दगी है यहाँ ? ऐसे गन्दे पानी में नहाने से खुजली हो जाती है। पेट में यह पानी जाने से तरह-तरह की बीमारियाँ लग जाती हैं। चलो वापिस घर। घर में नल के पानी से ही नहाना।

घर लौटते हुए उसे बड़ी शरम लग रही थी। उसके पति ने ही कहा था—कमली ! इन पंडितों की बातों में न आना। जमना का पानी बहुत गन्दा होता है। तुम उसमें न नहाना।

पर लड़का पाने की धुन में कमली ने एक न सुनी। वह पति की इच्छा के विरुद्ध चल दी—जमना नहाने। उसने सोचा कि खाली घड़ा देखकर वे मज़ाक उड़ाएँगे। उनके मज़ाक की कल्पना करके वह लजा रही थी।

जब कमली के पति खूब हँस लिए तो उसने पूछा—"क्यों जी ! जमना का पानी गन्दा कैसे हो गया ? मैं जब छोटी-सी थी तब गई थी माँ के साथ नहाने। तब तो पानी ऐसा गन्दा न था। तब तो मैं खूब नहाई थी, खूब

देर तक छप-छप करती रही थी। लोग पहले भी जमना के किनारे रहते थे। रोज़ जमना के पानी में नहाते थे। फिर अभी क्यों·····?

कमली के पति ने कहा—तब जमना के किनारे की बस्तियों में भीड़ नहीं थी। लोग थोड़े से थे। उनकी गन्दगी जमना को गन्दा नहीं कर सकती थी। बहता पानी निर्मल होता है लेकिन अब भीड़ भी ज्यादा है, बहुत ज्यादा है। उनकी निकली हुई गंदगी भी अधिक मात्रा में है। जमना उसे साफ नहीं कर सकती। खुद गन्दी हो जाती है।

कमली ने पूछा—"क्या सब नदियाँ इसी प्रकार गन्दी हो जाती हैं?

कमली का पति—हाँ आजकल सब नदियाँ गन्दी हो रही हैं। क्या गंगा, क्या जमना नदियों के किनारों की जो बस्तियाँ होती हैं, उनकी गन्दगी नदियों में आजाती है। जितने लोग ज्यादा होते हैं उतनी ही अधिक गंदगी होती है जितनी अधिक गन्दगी होती है उतनी ही अधिक बीमारियाँ होती है लोग कम होंगे तो गन्दगी कम होगी, बीमारियाँ कम होंगी।

कमली—हमारे पीने का पानी कहाँ से आता है?

कमली का पति—जमना के इसी पानी को साफ करके नलों में छोड़ा जाता है।

कमली—अरे राम राम! वही गन्दा पानी हम को पीना पड़ता है। छीः छीः

कमली का पति—छीः छीः करने से क्या लाभ? बात तो तब है जब तुम भीड़ कम करो। और भीड़ कम करके गन्दगी कम करो।

कमली—तो क्या मैंने ही भीड़ बढ़ा रखी है ?

कमली का पति—पंडित जी के पोछे तो तुम्हीं पड़ी हो। एक और हो जाएगा तो भीड़ में एक प्राण और बढ़ जाएगा न।

कमली सिर झुकाए सब सुनती रही।

कमली के पति ने कहा—

अब तो तुम यही ध्यान में रखा करो कि

हमारा है लक्ष्य महान।
लड़का लड़की एक समान।

कमली ने कहा—हूँ।

उसके पति फिर बोल उठे—अगर तुम्हें यह नारा याद नहीं रहा तो लड़का हो जाने की इच्छा से बच्चों की एक लम्बी लाइन खड़ी कर दोगी। फिर जनसंख्या बढ़ेगी, भीड़ बढ़ेगी। फिर जमना का जल और अधिक गन्दा हो जाएगा। और फिर तुम कहोगो—

जमना तेरा पानी मैला।
मैं कहूँगा
घर घर लगा है बच्चों का मेला।
इसलिए याद रखना—
पानी रहता साफ वहाँ
सीमित है परिवार जहाँ ॥

□ □

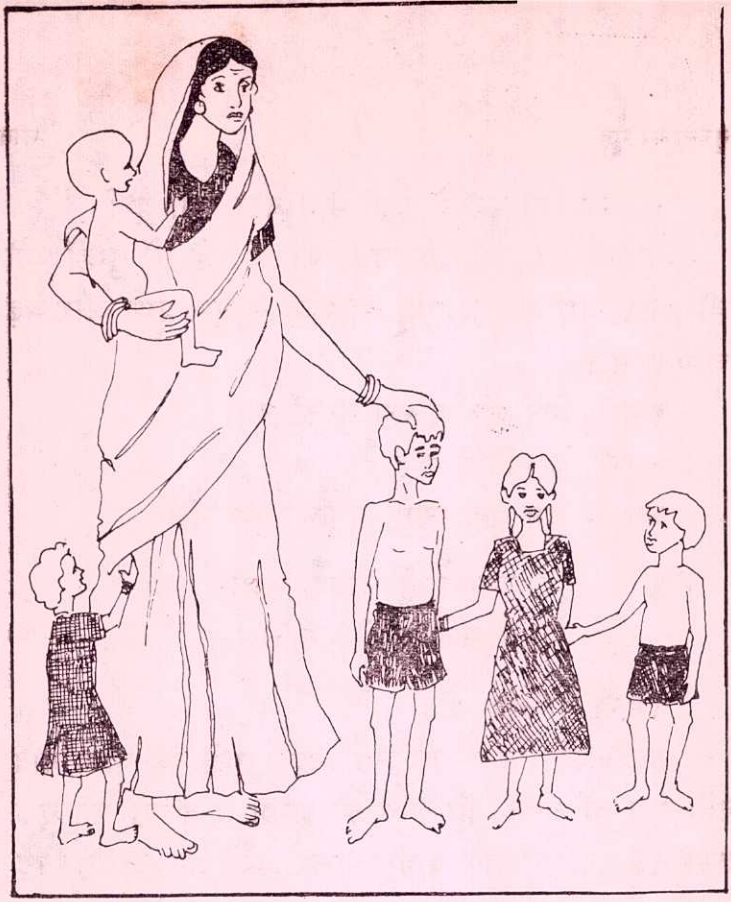

आटा कम क्यों हुआ ? आटा खतम क्यों हुआ ? आटा महंगा क्यों हुआ ?

बढ़ते परिवार; घटते भण्डार

पारो के बच्चे सवेरे से रो रहे हैं। भूख से बिलबिला रहे हैं, कुलमुला रहे हैं। पारो उन्हें तरह-तरह से बहला रही है, समझा रही है, पर वे हैं कि मानते ही नहीं। उन्होंने रो-रोकर आसमान सिर पर उठा लिया है।

पारो कल राशन लेने गई थी। सुबह लाइन बहुत

लम्बी थी। पारो घर लौट आई। घर का काम-धन्धा भी तो करना था। दुबारा जब गई तो राशन वाले ने कह दिया—राशन खतम हो गया। अब कल आना।

पारो पर पहाड़ टूट पड़ा। बाज़ार से खरीदती है तो महंगा बहुत पड़ता है। दो दिन के राशन के पैसे एक ही दिन में उड़ जाते हैं। सो खाली हाथ घर लौट आई। अब दुकान में राशन आएगा तभी तो राशन लाएगी वह। पर बच्चों को इतना सबर कहाँ?

उसके पड़ोस में एक ग्राम सेविका रहती थी। उसने पूछ ही लिया—पारो बहन। क्या बात है? आज सवेरे-सवेरे बिगुल क्यों बज रहे हैं।

पारो—क्या बताऊँ बहन आज मेरे घर में आटा बिल्कुल निबट गया। रोटी सेंकूँ तो कैसे सेंकूँ? इसीलिए बच्चे-चीख चिंघाड़ रहे हैं।

पारो—तुम तो अजीब सवाल पूछ रही हो आज। बनिया बेईमान है इसलिए वह महंगा अनाज बेचता है।

ग्राम सेविका—बनिया तो समाज की गलतियों का फायदा उठा रहा है।

पारो—क्या मतलब? समाज का इसमें क्या कसूर है?

ग्राम सेविका—समाज का यही कसूर है कि उसने पैदावार से अधिक खाने वाले पैदा कर दिए हैं।

पारों ने कहा—मैं आपका मतलब नहीं समझती।

ग्राम सेविका बोली—देख! अगर खाने वाले कम होंगे और पैदावार ज्यादा होगी तो अनाज सस्ता मिलेगा। खुला मिलेगा।

अगर खपत ज्यादा हुई और उसके मुकाबले पैदावार कम हो तो अनाज मुश्किल से ही मिलेगा। फिर बनिया उसे इसी लिए तो महंगे दामों पर बेचेगा।

पारो ने पूछा—अच्छा, यह पैदावार कैसे कम हो गई?

ग्राम सेविका—कुल पैदावार नहीं घटी। पैदावार तो पहले से कई गुना अधिक हो रही है। खेती के नए-नए तरीके निकल आए हैं। सुधरे हुए बीज, नई-नई मशीनें, उपकरण, ट्रेक्टर खाद, कीटनाशक दवाइयाँ आदि। फिर आज का किसान भी खूब समझदार हो गया है और खूब पैदा कर रहा है। पर बड़ा अफसोस यह है कि लोगों की संख्या बहुत बढ़ गई है। और दिन रात बढ़ती जा रही यह बढ़ी हुई संख्या सारा अनाज चट कर जाती। इसलिए अनाज कम पड़ जाता है। बढ़ती हुई भीड़ ने विकास के सारे परिणामों को चाट कर रख दिया है।

सीमित है आबादी जहाँ।
विकास के फल मिलते वहाँ।

अब तुम ही बताओ। जब तुम्हारे बच्चे नहीं थे तब तुम कितना राशन लाती थीं।

पारो—यही कोई आध किलो रोज़ का काफी हो जाता था।

ग्राम सेविका—अब तुम आठ जने हो। अब कितना लाती हो?

पारो ने डूबते हुए स्वर में कहा—अब रोज़ का चार पाँच-किलो खप जाता है।

ग्राम सेविका—तो बताओ। एक किलो के चार किलो

कहाँ से पैदा होंगे ? कैसे पैदा होंगे ? हमारी ज़मीन तो पहले ही जितनी हो है। वह तो बढ़ नहीं सकती। हाँ, खाने वाले मुँह जरूर बढ़ गए हैं। परिवार बढ़ रहे हैं ; भण्डार घट रहे हैं।

पारो—तो फिर इसका इलाज ?

ग्राम सेविका—इसका इलाज यही है कि हर आदमी अपने परिवार को नियोजित करे। सीमित रखे एक या दो

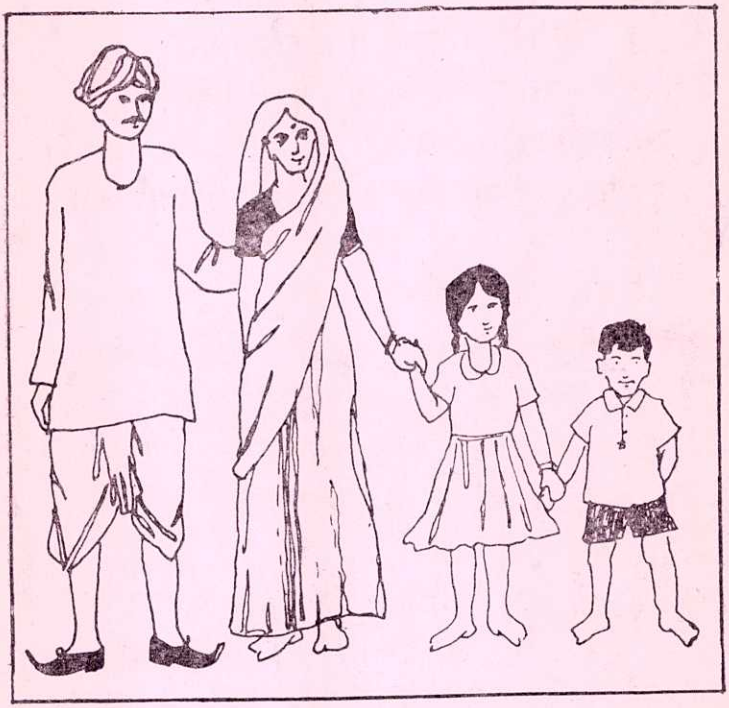

बालक पैदा करके ही बन्द कर दे। तभी बढ़ती हुई आबादी काबू में आ सकती है। नहीं तो ?

पारो—नहीं तो क्या ?

ग्राम सेविका—नहीं तो भूखों मरने की भी नौबत आ

जाएगी। मौत बीमारी से नहीं, भूख से होगी।

इसलिए हर साल बच्चा पैदा न करो। बच्चों की पैदाइश पर रोक लगाओ। बढ़ती हुई आबादी पर रोक लगाओ। भीड़ कम करो। तभी खाना पूरा पड़ेगा।

क्या तुम भूल गईं उस दिन डागदर बाबू ने कहा था ?

पारो—क्या कहा था ?

ग्राम सेविका—डागदर बाबू ने कहा था—

छोटा परिवार सुख का आधार,
उत्तम स्वास्थ्य मिले पूरा आहार।

इसलिए याद रखो—

पूरे पड़ते भण्डार वहाँ। सीमित है परिवार जहाँ।

पारो झुकी आँखों से ग्राम सेविका को अपना दुःख-दर्द बयान करती हुई

वो जंगल कहां

सुगनी कई सालों बाद अपने गाँव जा रही है। दस साल पहले उसके आदमी ने रिक्शा चलानी शुरू की थी तब से वह शहर में ही रह रही है। इस बार उसका बाप बीमार पड़ गया था। उनका पोस्ट कार्ड आया था। इसीलिए सुगनी गाँव जा रही है।

सुगनी ने अपने बच्चों को बताया था—देखो बच्चो। वहाँ खूब सारे घने जंगल हैं। बड़े-बड़े पेड़ हैं। पेड़ इतने घने हैं कि सूरज दिखाई नहीं देता। दिन में भी रात नजर आती है।

सुगनी के बच्चे पूछते हैं—तुम वहाँ पेड़ों से क्या-क्या तोड़ती थीं ?

सुगनी उन्हें बताती है—मैं सुबह उठते ही चल देती थी। फिर इमली, केले, पपीते, शरीफे, महुआ, पान, नारियल, लाख, कत्था, गोंद, तेंदु के पत्ते, साल और करंज के बीज, आँवला, हरड़, बेर जमा करती थी। कुछ खाते थे, कुछ बेचते थे। रेशम के कीड़े भी पालते थे।

बहुत सारी जड़ी-बूटियाँ जमा करते थे। वे दवाइयों में काम आती थीं।

लकड़ी से औज़ार बनाते थे।

जंगली पशुओं का शिकार करते थे। उनको खाते थे।

सुगनी के बच्चे पूछते हैं—वहाँ खाना काहे पर बनता था ? क्या वहाँ मिट्टी का तेल मिलता है ?

सुगनी—अरे वहाँ मिट्टी के तेल की क्या जरूरत ? वहाँ चारों ओर लकड़ी ही लकड़ी है। लकड़ी काटते हैं और जलाते हैं। रात को आग के चारों ओर नाचते हैं। वहीं गरमाहट में सो जाते हैं।

रात-भर के सफर के बाद सुगनी अपने माँ और बाप के घर जा पहुँची।

लेकिन वहाँ की हालत देखकर भौंचक्की रह गई। वहाँ न जंगल था, न पेड़ थे। चारों ओर वीरानी थी।

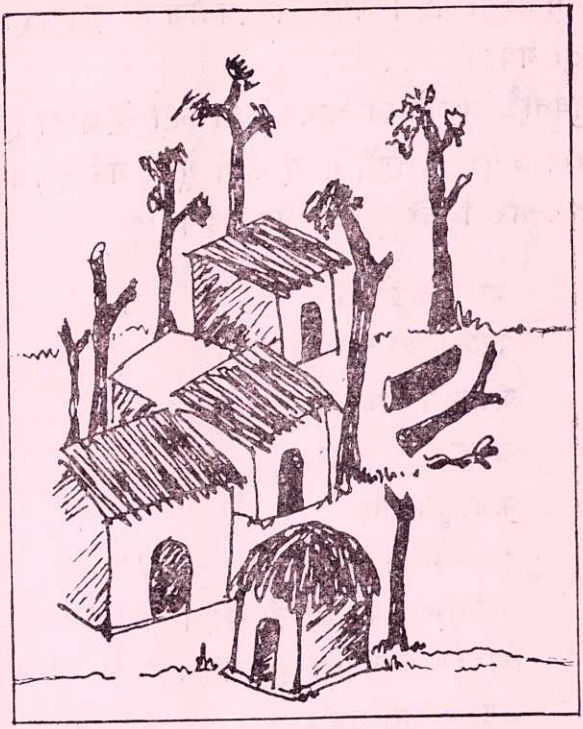

सुगनी जाते ही बाबा से चिपट गई। बीमार बाप भी सुगनी को देखकर रोने लगा।

कुछ देर पीछे सुगनी ने पूछा—बाबा। यहाँ तो बहुत भारी जंगल था। जंगल कैसे कट गया ?

बाबा—बेटी। हमने अपनी झुग्गियाँ डालने के लिए जंगल साफ किए। भीड़ बढ़ती गई, झुग्गियों की संख्या भी बढ़ती गई। उसी हिसाब से जंगल भी साफ होते गए।

सब लकड़ी पर ही खाना बनाते रहे। उसे बेरहमी से काटते रहे। मुफ्त की चीज़ की कदर नहीं होती। ज़रा-

सी टहनी की ज़रूरत होती है तो पूरी डाल काट डालते हैं।

जैसे-जैसे आबादी बढ़ती गई, वैसे-वैसे लकड़ी की खपत भी बढ़ती गई। जंगलों का विनाश भी उतनी ही तेज़ी से बढ़ता गया।

सुगनी—पशुओं का चारा ? वो कहाँ से आता है ?

बाबा—देखती नहीं, गउएँ कैसी सूख गई हैं। कितनी ही भेड़-बकरियाँ तो भूख से मर गईं।

जंगल कटने से
पशुओं का चारा गया।
जलावन गया।
खाना-पीना गया।
फल-फूल गए।
इमारती लकड़ी गई।
उद्योग-धंधे की लकड़ी गई।
शिकार के जंगली पशु गए।
जड़ी-बूटियाँ गईं।
साफ हवा गई।
बारिश भी कम हो गयी।

अब तो

नंगी धरती करे पुकार।
पेड़ लगा कर करो श्रृंगार।

धरती की पुरानी हरियाली याद करके सुगनी की आँखों में आँसू छलछला आए और टप-टप दो बूँद आँसू निकल पड़े।

सुगनी बाप से बोली—मतलब यह है कि बढ़ती हुई आबादी ने जंगल भी निगल लिए। तब तो हमें कोशिश करनी चाहिए कि अब आबादी अधिक न बढ़े। तभी हमारी गुज़र-बसर होगी, नहीं तो सब भूखे मर जाएँगे। गन्दी हवा से खुद ही घुट जाएँगे। अब तो

आबादी घटाना देश का नारा,
पेड़ लगाना धर्म हमारा ॥

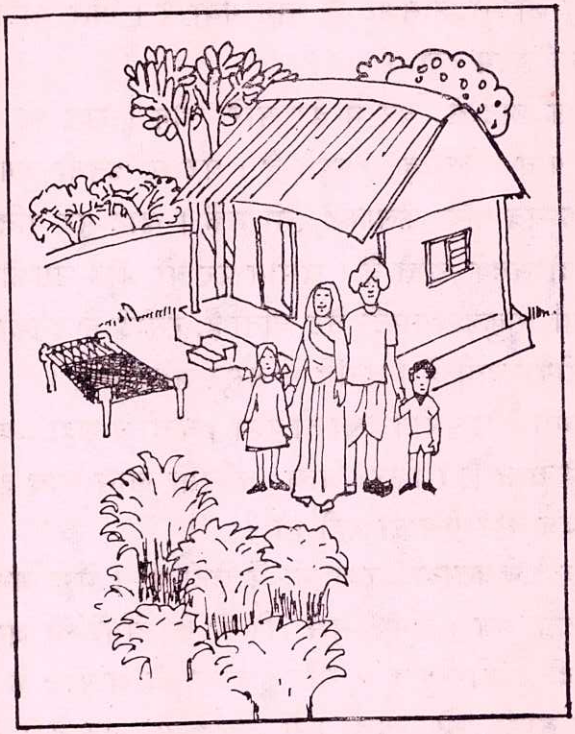

सुगनी को याद आया आबादी घटाने का उपाय। उसकी पड़ौसिन ने कहा था—

पहला बच्चा जल्दी नहीं,
दूसरा बच्चा अभी नहीं,
तीसरा बच्चा कभी नहीं ॥ □□

छः छिवका छत्तीस

चन्दो रो रही है। फफक-फफक कर रो रही है। उसका सारा आँचल आँसुओं से भीग गया है। फिर भी उसका रोना नहीं थम रहा।

उस छोटे से घर में ढेर सारे लोग। रात को लेटती है तो पाँव सिकोड़ने पड़ते हैं। घर में इतनी जगह भी नहीं कि सब पाँव फैलाकर सो सकें। खाट पर पति और उसके दो लड़के सोते हैं। ज़मीन पर वो और उसकी चार लड़कियाँ सिकुड़ी सिमटी लेट जाती हैं, रसोई में उसकी सास ननद सोए रहती हैं। बरांडे में ससुर और देवर।

कुन्ती ने उसे रोते देखा तो पूछा। चन्दो ने कहा—यह तो रोज़ की बात है। फिर आज कौनसी ख़ास बात हो गई है? आज क्यों ऐसे रो रही हो?

चन्दो ने बताया—रात को मैं लेटी थी। मेरा अंग-अंग दुःख रहा था। तभी मुझे किसी के साँसों की आवाज़ सुनाई दी। ज़ोर-ज़ोर से साँस चलने की आवाज़ के साथ ही मेरी साड़ी भी खिंची। मैं झटके से उठ बैठी। इन सांसों को मैं पहचानती हूँ। कैसे भूल सकती हूँ उन्हें। आज तेईस साल से सुनती आ रही हूँ। इन ज़ोर-ज़ोर की गरम-गरम सांसों को। इन सांसों में छलकता है उनका काम भाव, मुझे आगोश में भर लेने की इच्छा।

कुन्ती ने खिलखिलाकर कहा—वाह ! तो इसमें रोने की क्या बात है। अभी तेरी उमर ही क्या है जो चिढ़ गई इससे ।

चन्दो ने कहा—नहीं कुन्ती । यह हँसी की बात नहीं। मुझे क्या उनके गर्म आगोश में सोना बुरा लगता है ? नहीं । लेकिन यह कैसे हो सकता है ? पास में लड़कियाँ, लड़के सब सोए रहते हैं। कहीं किसी की आँख खुल गई तो ? छिः छिः ।

कुन्ती—तो फिर क्या किया तूने ?

चन्दो—मैंने उसे धक्का दे दिया । गुस्से से परे ठेल दिया । वे चले गए । आज सुबह बोले नहीं । आज खाना भी नहीं खाया । रात का गुस्सा खाने पर उतरा । तू ही बता कुन्ती मैं क्या करूँ ? मेरा घर ही छोटा पड़ गया है । जब ब्याही आई थी तो यही घर बड़ा-बड़ा लगता था ।

कुन्ती—यह तो पहले सोचना चाहिए था चन्दो । न इतने बच्चे होते, न घर छोटा पड़ता ।

अभी क्या है । आगे-आगे देखो होता है क्या ? जब लड़कों की शादियाँ होंगी । उनके बच्चे होंगे ।

तुमने छः पैदा किए । अब हर किसी के छः छः होंगे तो सोच जरा । उनके छः छिक्का छत्तीस बच्चे होंगे । कहां समाएँगेवे ? कैसे समाएँगे ? वे फिर उन छत्तीस के भी छः छः हुए तो कुल 216 बच्चे तो हो ही जाएँगे । फिर एक दिन ऐसा आएगा कि लेटना तो दूर उन्हें खड़े होने की भी, जगह भी नहीं मिलेगी । तब एक दूसरे के ऊपर गिरेंगे, पड़ेंगे, कटेंगे, मरेंगे ।

सुनते ही चन्दो फिर रोने लगीं। सच ही तो हैं—कहाँ समाएँगे इतने बच्चे ?

सोचते सोचते चन्दो के माथे की नसें फटने लगीं। सिर घूमने लगा।

उसने मन ही मन निश्चय किया कि वह अपने बच्चों को ज़रूर बताएगी, समझाएगी। कहेगी—देखो बच्चो तुम सब छः - एकम् - छः ही बनाना, छः छिक्का छत्तीस मत करना।

धरती पूरी पड़ती वहाँ, छोटा है परिवार जहाँ ॥

□□

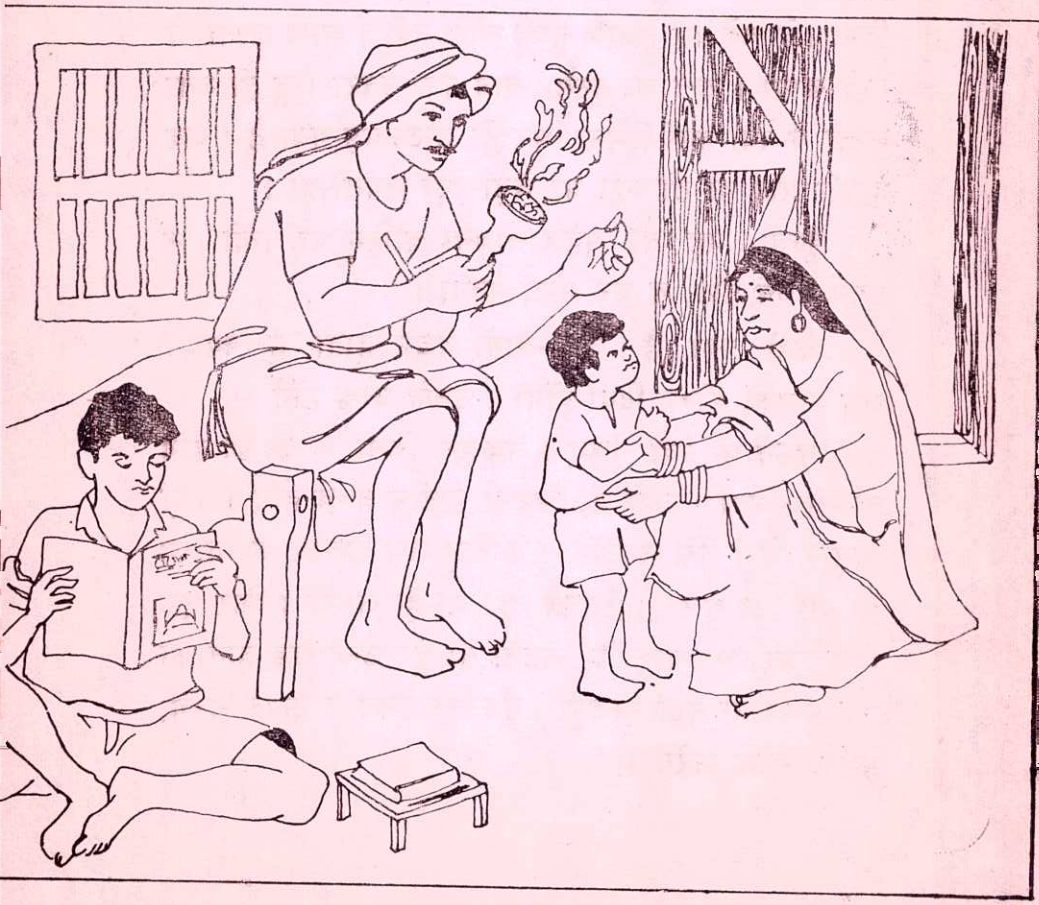

बढ़ता शोर, फटते कान

बिंदिया ने गुस्से में एक तमाचा जड़ दिया बच्चे के गाल पर। बच्चा चीख-चीख कर रोने लगा। बोला—तुम्हें क्या हो गया अम्मा। पहले तो तुमने मुझे कभी नहीं मारा था। अब तुम कैसी होती जा रही हो? बात-बात पर मारने लगीं।

बिंदिया ने अपना कान बच्चे के पास करते हुए कहा—क्या कहा? ज़रा जोर से तो बोल। कुछ सुनाई ही नहीं देता। पता नहीं क्या बड़बड़ाए जा रहा है? बोल! बोल! फिर से बोल। नहीं तो और मारूँगी।

बिंदिया गुस्से से चिल्ला-चिल्ला कर बोल रही थी। बच्चा बोला—पता नहीं तुम्हें क्या हो गया है? हर बात को दो-दो तीन-तीन बार पूछती हो। और खुद इतना धीरे बोलती हो कि हमें सुनाई नहीं देता।

अब तक बिंदिया का गुस्सा थम गया था। वह बच्चे को पुचकारती हुई बोली—मुझे कुछ नहीं हुआ बेटे। मैं तो पहले जैसे ही बोलती हूँ। तुझे क्या मेरी बात सुनाई नहीं देती। हाँ यह सच है कि तुम सब धीरे-धीरे बोलने लगे हो मुझे ही तुम सब की बातें सुनाई नहीं देतीं।

तब तक दूसरे बच्चे भी वहाँ जमा हो गए थे। बोले—नहीं अम्मां नहीं। हम धीरे नहीं बोलते। धीरे तुम बोलने

लगी हो ।

सबकी बात सुन कर बिंदिया घबरा गई । वह काफी दिन से महसूस कर रही थी कि आपस में किसी को एक-दूसरे की बात सुनाई नहीं देती । नतीजा यह हुआ कि सब एक-दूसरे पर झल्लाने लगे । बिंदिया ने सोचा कि ज़रूर कोई भूत सिर पर सवार हो गया है । इस चिंता में बिंदिया गाँव लौट गई ।

गाँव पहुँचते ही बिंदिया शान्त हो गई । उसके बच्चे भी शान्त हो गए । उनका क्रोध, उनकी झल्लाहट, उनकी चिड़चिड़ाहट सब कपूर की तरह गायब हो गई । बिंदिया समझ नहीं सकी कि गाँव पहुँचते ही उसका दिमाग कैसे ठण्डा पड़ गया ? यह किसका जादू था ? जादू वाले ने जादू हटा क्यों लिया ?

एक दिन गाँव में फ़िल्म दिखाने वाले आए । आस-पास के दस गाँव वाले जमा हो गए । बच्चों की चीख पुकार, लोगों की बोलचाल, फ़िल्म के गानों और बाजों की आवाज़ जेनरेटर की आवाज इन सबने मिलकर ऐसा माहौल पैदा कर दिया कि बिंदियाँ को चहल-पहल भरे शहर की याद आ गई । उफ् बाप रे, अगर दो-चार दिन और बिंदिया को वहाँ रहना पड़ता तो वह जरूर पागल हो जाती, बच नहीं सकती थी । चारों तरफ़ शोर-ही-शोर था वहाँ ।

बच्चों की चीख-पुकार का शोर । भीड़ का शोर । रेल का शोर । भोंपू का शोर । पावर-हाउस का शोर । बस का शोर । मोटर का शोर । स्कूटर का शोर । मोटर-साइकिल का शोर । कूलर का शोर, फ्रिज का शोर ।

रेडियो का शोर, टी० वी० का शोर, सम्मेलनों में लगे भोंपुओं का शोर। सब कुछ याद करके बिंदिया को घबराहट होने लगी। उसने दोनों कानों पर हाथ रख लिए।

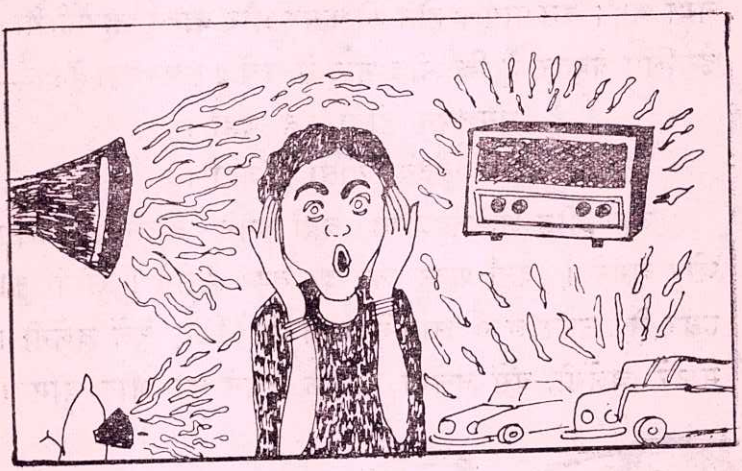

फिल्म शुरू हो गई। फिल्म का नाम था 'प्रदूषण'। प्रदूषण का अर्थ है कुदरत की दी हुई चीजों में गन्दगी की मिलावट। साफ हवा में गन्दी हवा की मिलावट। साफ पानी में बीमारी फैलाने वाली गन्दगी की मिलावट। शान्त वातावरण में शोर की मिलावट। बिंदिया बड़े ध्यान से फिल्म देख रही थी।

फिल्म में शोर मचाने वाली चीज़ें दिखाई गई थीं और बताया था, "सावधान, सावधान। तेज़ शोर-गुल से बचें। तेज़ शोर से कान फट सकते हैं। तेज़ शोर सुनने से आदमी पागल हो सकता है। तेज़ शोर सुनने से आदमी चिड़चिड़ा हो जाता है। तेज़ शोर सुनने से आदमी झगड़ालू हो जाता है। तेज़ शोर सुनने से आदमी की 'नींद न आने की' बीमारी

हो जाती है। तेज़ शोर सुनने से आदमी पागल भी हो जाता है।"

बिंदिया ने सोचा—शहर में और तो सब कुछ हो ही गया था। बस पागल होने की कसर और बाकी रह गई थी। इसलिए बेहतर है कि भीड़-भाड़ से बचें। सच कहा है कि—

पागलपन होता है वहाँ।
शोर बहुत होता है जहाँ।

जहाँ भीड़ अधिक होगी वहाँ उनसे बोलने के लिए भोंपू लगेंगे। वहाँ शहर दूर-दूर तक फैलेंगे। लोगों को इधर से उधर तक लाने-ले-जाने के लिए रेलें चलेंगी। मोटरें चलेंगी, बसें चलेंगी, उनके चलने का शोर होगा।

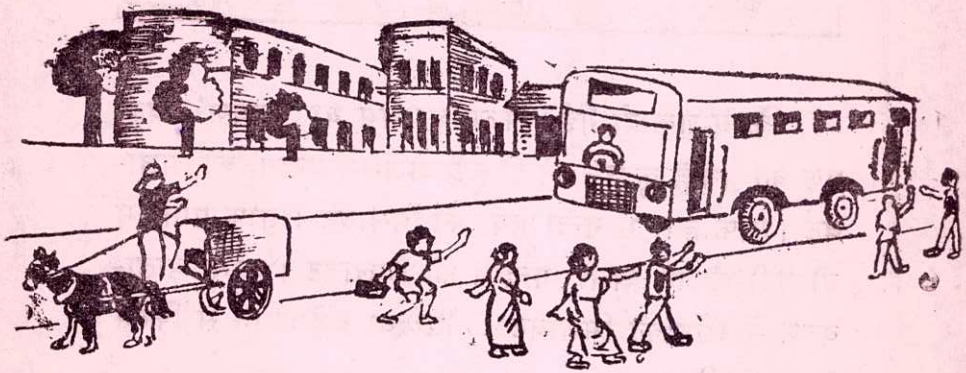

उनके भोंपुओं का शोर होगा। लोगों के बोलने का शोर होगा। जितने अधिक लोग होंगे उतना अधिक शोर होगा।

शोर से बचने के लिए भीड़ कम करे। किसी महापुरुष ने ठीक ही कहा है—

घर के आँगन में हों दो सुन्दर फूल।
फिर न दोहराएँ कभ यह भूल॥ □□

चार से भले दो, दो से भला एक

कुदरत ने जी खोल कर मनुष्य को वरदान दिया था। साफ़ ठण्डी हवा का वरदान। शुद्ध शीतल जल का वरदान। दूर-दूर तक फैली भूमि का वरदान। सुन्दर रमणीक फल-फूल-भरे वनों का वरदान। लेकिन मनुष्य ऐसा खपाउ कपूत निकला। उसने आबादी बढ़ाने का एक सिलसिला शुरू कर दिया। इस आबादी ने हर चीज़ का बेफिक्री से उपयोग किया। बेरहमी से उनका इस्तेमाल किया। यहाँ तक कि कुदरत के अनन्त-अनन्त भण्डार भी कम पड़ गए।

बचपन में एक कहानी पढ़ी थी।

'एक मूरख था। वह एक पेड़ की डाल पर बैठ गया। वह डाल एक खाई पर झूल रही थी। खाई में लबालब पानी भरा था। पानी में एक मगरमच्छ था। मगरमच्छ ने उस आदमी को देखकर अपना मुँह खोल दिया। उस डाल को कई चूहे काट रहे थें। मूरख के ऊपर मधुमक्खियों का एक छत्ता लटक रहा था। मूरख को लालच आया। उसने छत्ते में एक छेद कर दिया और शहद पीने लगा। शहद पीते समय उसे यह होश नहीं रहा कि चूहे उसकी डाल को काट रहे थे। डाल कट जाने पर वह खाई में गिरेगा। गिरते ही मगरमच्छ उसे खा जाएगा। इन सब खतरों से बेफिकर होकर वह शहद चाट रहा था।'

आज मनुष्य उसी मूरख की तरह जीवन बिता रहा है। वह शहद रूपी सन्तान और आबादी बढ़ाने में मस्त है। यह आबादी उसे धोखे में रखे हुए हैं। वह आबादी चूहों की तरह उसकी डाल रूपी भूमि को कुतर रहे हैं। यह आबादी उस मगरमच्छ की तरह उसका खाना और हवा-पानी सब कुछ निगल जाने को तैयार है। यह आबादी उस खाई की तरह है जिसमें जान लेवा जल की तरह शोर और अशान्ति-भरी हुई है।

समय की मांग है कि हम चेत जाएँ, सँभल जाएँ। नहीं तो भूख से व्याकुल हो, इंसान इंसान को खाने लगेगा, भूमि इतनी छोटी पड़ जाएगी कि इंसान को खड़े होने को भी जगह नहीं मिलेगी। साँस लेने को साफ़ हवा नहीं मिलेगी। पीने को पानी नहीं मिलेगा। नदियों में सिर्फ नालियों का पानी बहेगा। शोर के मारे सबके कान फट जाएँगे। यह भीड़ टिड्डी दल की तरह कुदरत के सारे वरदान चट कर जाएगी। यह भीड़ सुरसा के मुँह की तरह सब कुछ हड़प कर जाएगी।

इसलिए ज्यादा बच्चे पैदा करना नैतिक और सामाजिक अपराध है। इसलिए हमें चाहिए कि बच्चे कम पैदा करें। भीड़ बढ़ने से रोकें ताकि कुदरत का कल्प वृक्ष फिर से अपना पिटारा हमारे लिए खोल दे।

रहने को ज़मीन दे।
भर-पेट भोजन दे।
शीतल स्वच्छ जल दे।
साँस लेने को साफ हवा दे।
शोर गुल दूर करे।

मन को शान्ति दे ।
जंगल रूपी कल्प वृक्ष दे ।
आपस में प्रेम दे, प्यार दे ।

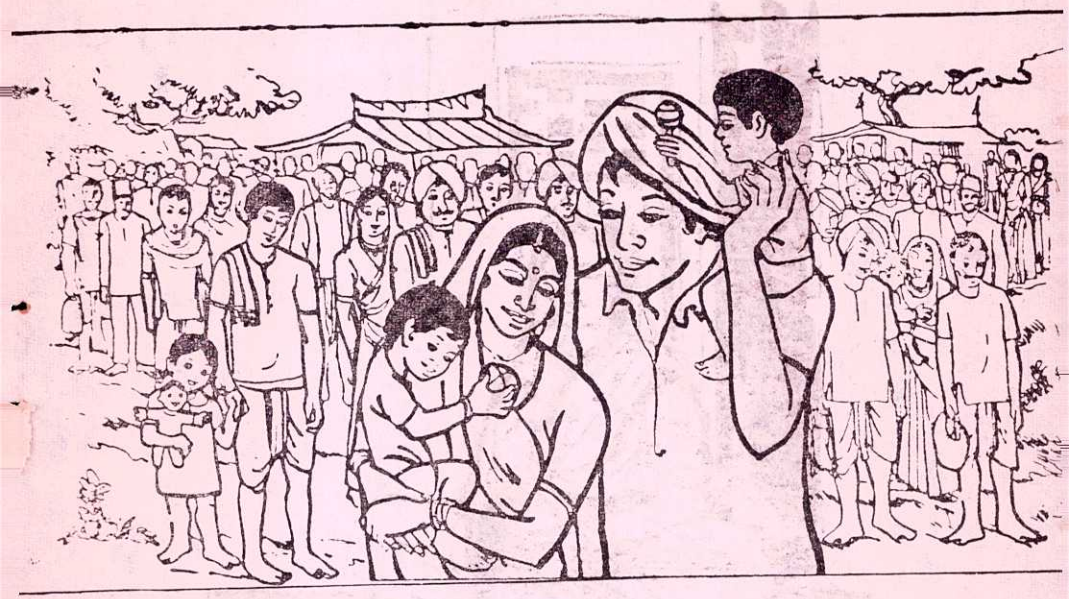

किसी ने ठीक ही कहा है :—

एक या दो बच्चे,
लगते हैं घर में अच्छे ।

यह एक लाख टके की बात है । इन्सान के भले के लिए, अपने भले के लिए, समाज के भले के लिए, देश के भले के लिए अच्छा यही होगा कि इस पर हम सभी अमल करें, संयम रखें और सुख से रहें ।

गोद में एक ही सुमन होना, परिवार के लिए सुखद है